मन के प्यारे – प्यारे पेड़

ऐसा लगता पहनी है टोपी

और उनके साथ नाचें गोपी,

झर-झर- झर पत्ते बरसाते

फिर उस पर पत्ते खिल जाते।

रक्त बहता है उनमें से

लोग बढ़ जाते हैं उनसे,

झर-झर-झर पत्तों वाले

मीठे-मीठे फल दिलाते। कभी-कभी हंस जाते हैं पेड़

कभी-कभी रो जाते हैं पेड़।

कवित्री – अवनि अग्रवाल